सूरह — एक कहानी

सूरह अन-नह्ल

शहद की मक्खी

पूरा सफ़र — नेमतों की सूरह —

जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 16 • 128 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

अता अम्रुल्-लाहि फ़-ला तस्तअ्जिलूह
1. अल्लाह का हुक्म आ गया, तो उस के लिए जल्दी मत मचाओ।

व इन तअ्उद्दू नि'अ्मतल्-लाहि ला तुह्सूहा
18. और अगर तुम अल्लाह की नेमतें गिनो तो शुमार न कर सकोगे।

व औहा रब्बुक इलन्-नह्लि अनित्-तख़िज़ी मिनल्-जिबालि बुयूता
68. और तेरे रब ने शहद की मक्खी पर इल्हाम किया कि पहाड़ों में घर बना।

इन्नल्-लाह यअ्मुरु बिल्-'अद्लि वल्-इह्सानि व ईता-इ ज़िल्-क़ुर्बा
90. बेशक अल्लाह इंसाफ़, एहसान और रिश्तेदारों को देने का हुक्म देता है।

मन 'अमिल सालिहम्-मिन ज़करिन औ उन्सा व हुव मुअ्मिनुन फ़-ल-नुह्यियन्नहू हयातन तय्यिबह
97. जो नेक अमल करे, मर्द हो या औरत, जब कि वो मोमिन हो — हम उसे ज़रूर एक अच्छी ज़िंदगी जिलाएँगे।

उद्'उ इला सबीलि रब्बिक बिल्-हिक्मति वल्-मौ'इज़तिल्-हसनह
125. अपने रब के रास्ते की तरफ़ हिकमत और अच्छी नसीहत से बुलाओ।

जल्दी मत मचाओ

बेटा, ये सूरह उलमा के दरमियान '**सूरतुन-नि'अम**' — **नेमतों की सूरह** — के नाम से जानी जाती है, क्योंकि शुरू से आख़िर तक ये आपको अल्लाह के एहसानों में से एक के बाद एक चलाती है, यहाँ तक कि आप तक़रीबन भर जाते हैं।

मगर देखिए ये कैसे खुलती है, बेटा: '**अता अम्रुल्-लाहि फ़-ला तस्तअ्जिलूह — अल्लाह का हुक्म आ गया, तो उस के लिए जल्दी मत मचाओ — सुब्हानहू व त'आला 'अम्मा युश्रिकून**।'

बेटा, ज़माना ग़ौर कीजिए: 'अता' — ये **आ चुका**, माज़ी में, हालाँकि वो अभी हुआ न था। **यही क़ुरआन का मुतलक़ यक़ीन बयान करने का अंदाज़ है: ये इतना यक़ीनी है**

कि इसे हो-चुके के तौर पर कहा जाता है।

मुंकिर मज़ाक़ उड़ाते थे, उस अज़ाब का मुतालबा करते जिस से उन्हें ख़बरदार किया गया था। और अल्लाह कहते हैं: ये आ रहा है — इसे जल्दी मत करवाओ।

बेटा, और यहाँ हमारे लिए भी एक सबक़ है। हम बे-सब्रे लोग हैं। हम दुआ का जवाब अभी चाहते हैं, तबदीली अभी, राहत अभी, इंसाफ़ अभी। और आयत कहती है: **उसका हुक्म अपने मुक़र्रर वक़्त पर आता है; वक़्त के मालिक को जल्दी में डालने की कोशिश मत करो।**

'**युनज़्ज़िलुल्-मलाइकत बिर्-रूहि मिन अम्रिही 'अला मंय्यशा-उ मिन 'इबादिही अन अन्ज़िरू अन्नहू ला इलाह इल्ला अना फ़त्तक़ून** — वो अपने बंदों में से जिसपर चाहे अपने हुक्म की वही के साथ फ़रिश्ते उतारता है: **ख़बरदार करो कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मुझ से डरो।**'

'**ख़लक़स्-समावाति वल्-अर्ज़ बिल्-हक़्क़** — उसने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ बनाया — **त'आला 'अम्मा युश्रिकून**।'

और फिर, बेटा, एक आयत जिसने सदियों से पढ़ने वालों को मुस्कुराया है क्योंकि ये हमारे बारे में बिल्कुल सच है:

'**ख़लक़ल्-इंसान मिन नुत्फ़तिन फ़-इज़ा हुव ख़सीमुम्-मुबीन — उसने इंसान को एक बूँद से बनाया, और फ़ौरन वो एक खुला झगड़ालू बन गया।**'

बेटा, एक बूँद से — एक बहस करने वाले तक। एक ऐसी चीज़ से जिसे पानी से बहाया जा सकता था, एक ऐसे शख़्स तक जो खड़ा हो कर अपने बनाने वाले से झगड़ता है।

गिनो तो शुमार न कर सकोगे

और अब, बेटा, सूरह अपना नेमतों का लंबा जुलूस शुरू करती है — और देखिए ये कैसे उन मामूली चीज़ों से शुरू होता है जिनका कोई किसी का शुक्रिया अदा नहीं करता।

'**वल्-अन्'आम ख़लक़हा लकुम फ़ीहा दिफ़्उंव्-व मनाफ़ि'उ व मिन्हा तअ्कुलून — और चरने वाले मवेशी उसने तुम्हारे लिए बनाए; उन में गरमाहट और (बहुत से) फ़ायदे हैं, और उन में से तुम खाते हो।**'

बेटा, ख़ुद तख़्लीक़ के बाद नाम ली गई **पहली** नेमत **गरमाहट** है — वो ऊन और खालें जो एक जिस्म को जमने से बचाती हैं। सोना नहीं, ताक़त नहीं। **लिबास।**

'**व लकुम फ़ीहा जमालुन हीन तुरीहून व हीन तस्रहून — और तुम्हारे लिए उन में ख़ूबसूरती है जब तुम उन्हें शाम को वापस लाते हो और जब सुब्ह चरने भेजते हो।**'

बेटा, इसे देखिए। अल्लाह मंज़र की **ख़ूबसूरती** का ज़िक्र करते हैं — जानवर शाम ढले घर आते और सुब्ह निकलते हुए। वो इशारा कर रहे हैं कि **उन्होंने तुम्हें सिर्फ़ वो नहीं दिया जो काम का है, बल्कि वो भी जो देखने में प्यारा है।**

'**व तह्मिलु अस्क़ालकुम इला बलदिल्-लम् तकूनू बालिग़ीहि इल्ला बि-शिक़्क़िल्-अन्फ़ुस** — और वो तुम्हारे बोझ एक ऐसे शहर तक ले जाते हैं जहाँ तुम **अपनी जानों की बड़ी मशक़्क़त** के बग़ैर न पहुँच सकते थे — **इन्न रब्बकुम ल-रऊफ़ुर्-रहीम** — बेशक, तुम्हारा रब **नर्म-दिल** और **रहम वाला** है।'

'**वल्-ख़ैल वल्-बिग़ाल वल्-हमीर लि-तर्कबूहा व ज़ीनह** — और घोड़े, ख़च्चर और गधे ताकि तुम उन पर सवारी करो और **ज़ीनत** के तौर पर — **व यख़्लुक़ु मा ला तअ्लमून — और वो वो बनाता है जिसे तुम नहीं जानते।**'

बेटा, वो आख़िरी जुमला ग़ौर कीजिए। चौदह सदी पहले लिखा गया, जब सफ़र का मतलब जानवर थे — और क़ुरआन दरवाज़ा खुला छोड़ देता है: 'वो बनाता है जिसे तुम नहीं जानते।' **उस के बाद की हर सवारी उस आधे जुमले के अंदर है।**

फिर बारिश: '**हुवल्-लज़ी अन्ज़ल मिनस्-समा-इ मा-अन — लकुम मिन्हु शराबुन** — तुम्हारे लिए उस में से पीने का पानी है — **व मिन्हु शजरुन फ़ीहि तुसीमून** — और उस से वो सब्ज़ा उगता है जिस में तुम चराते हो।'

और फिर रात और दिन, सूरज और चाँद और सितारे: '**व हुवल्-लज़ी सख़्ख़रल्-बह लि-तअ्कुलू मिन्हु लह्मन तरिय्या** — और वही है जिसने **समंदर** को मुसख़्ख़र

किया ताकि तुम उस में से **ताज़ा गोश्त** खाओ — **व तस्तख़्रिजू मिन्हु हिल्यतन तल्बसूनहा** — और उस में से **ज़ेवर** निकालो जो तुम पहनते हो — **व तरल्-फ़ुल्क मवाख़िर फ़ीह** — और तुम कश्तियों को **उस में चीरते हुए** देखते हो।'

'**व 'अलामातिंव्-व बिन्-नज्मि हुम यह्तदून** — और निशानियाँ; **और सितारों से वो राह पाते हैं।**'

और फिर, बेटा, वो आयत जो अपने ऊपर की हर चीज़ को — और वो हर चीज़ जो तुम्हें कभी दी गई — समेट लेती है:

'**व इन तअ्उद्दू नि'अ्मतल्-लाहि ला तुह्सूहा — और अगर तुम अल्लाह की नेमतें गिनो, तो तुम उन्हें शुमार न कर सकोगे — इन्नल्-लाह ल-ग़फ़ूरुर्-रहीम — बेशक, अल्लाह बख़्शने वाला, रहम वाला है।**'

बेटा, उस आयत के इख़्तिताम पर रुकिए, क्योंकि ये हैरत-अंगेज़ है। वो अपनी बे-शुमार नेमतें बयान करते हैं — और फिर **बख़्शने वाले** और **रहम वाले** पर बंद करते हैं। वो दो नाम क्यों?

उलमा ने समझाया: **क्योंकि वो जानते हैं कि हम उन पर उनका शुक्र अदा करने में नाकाम रहेंगे।** वो एहसान गिनवाते हैं, तस्लीम करते हैं कि हम उन्हें गिन भी नहीं सकते, और फ़ौरन शुक्र में हमारी कमी के लिए अपनी मग़्फ़िरत का ज़िक्र करते हैं।

बेटा, यही तुम्हारा रब है। **वो देते हैं, और फिर तुम्हें न देख पाने पर बख़्श देते हैं।**

मक्खी को क्या सिखाया गया

और अब, बेटा, वो हिस्सा जो इस सूरह को उसका नाम देता है — और ये क़ुरआन के सब से क़ाबिल-ए-ज़िक्र हिस्सों में से एक है।

'**व औहा रब्बुक इलन्-नह्लि — और तेरे रब ने शहद की मक्खी पर इल्हाम किया — अनित्-तख़िज़ी मिनल्-जिबालि बुयूतंव्-व मिनश्-शजरि व मिम्मा यअ्रिशून — अपने लिए पहाड़ों में और दरख़्तों में और उस में जो वो बनाते हैं, घर बना।**'

बेटा, इस्तेमाल हुआ लफ़्ज़ '**औहा**' है — वही अस्ल जो 'वह्य', वही का है। **अल्लाह ने**

मक्खी पर वही की। यानी: इस छोटी मख़्लूक़ ने अपना हुनर सीखा नहीं; उसे **सिखाया** गया, सीधा, उसके ख़ालिक़ की तरफ़ से।

'सुम्म कुली मिन कुल्लिस्-समराति फ़स्लुकी सुबुल रब्बिकि ज़ुलुला — फिर हर फल से खा और अपने रब के रास्तों पर चल, जो तेरे लिए हमवार कर दिए गए।'

बेटा, 'सुबुल रब्बिकि ज़ुलुला' — तेरे रब के रास्ते, आसान और फ़रमाँबरदार बना दिए गए। मक्खी उड़ती है और लंबी मसाफ़तों पर एक छुपे छत्ते तक लौट आती है, और आयत उन रास्तों को '**तेरे रब के** रास्ते' कहती है।

'यख़्रुजु मिम्-बुतूनिहा शराबुम्-मुख़्तलिफ़ुन अल्वानुह — उनके पेटों से एक पीने की चीज़ निकलती है जिसके रंग मुख़्तलिफ़ हैं — फ़ीहि शिफ़ा-उल्-लिन्-नास — जिस में लोगों के लिए शिफ़ा है — इन्न फ़ी ज़ालिक ल-आयतल्-लि-क़ौमिंय्यतफ़क्करून — बेशक, इस में उन लोगों के लिए एक निशानी है जो **ग़ौर** करते हैं।'

बेटा, कई चीज़ें ग़ौर करने लायक़ हैं।

पहले: 'मुख़्तलिफ़ुन अल्वानुह' — **मुख़्तलिफ़ रंगों** का। शहद तक़रीबन सफ़ेद से ले कर गहरे अंबर तक होता है, उस पर मुनहसिर कि वो किन फूलों से आया — और आयत उस फ़र्क़ का नाम लेती है।

दूसरे: 'फ़ीहि शिफ़ा-उल्-लिन्-नास' — उस में **लोगों** के लिए शिफ़ा है, तमाम लोगों के लिए, सिर्फ़ मोमिनीन के लिए नहीं। नबी ﷺ ने शहद को इलाज के तौर पर इस्तेमाल किया और उसकी सिफ़ारिश की, और रिवायत है कि आपने एक आदमी से, जिसके भाई को पेट की शिकायत थी, फ़रमाया कि उसे शहद पिलाए।

तीसरे, बेटा — और यही सब से गहरा नुक़्ता है। देखिए मक्खी है क्या। एक मख़्लूक़ तुम्हारे नाख़ुन के बराबर। वो हज़ार फूलों से रस लेती है, एक ठीक जगह तक वापस रास्ता पाती है, कामिल छे-कोनी घर बनाती है जिन्हें इंजीनियर आज भी पढ़ते हैं, और ऐसी चीज़ पैदा करती है जो इंसानों को शिफ़ा देती है।

और वो ये सब इस लिए करती है कि अल्लाह ने उसे 'इल्हाम' किया। **उसका कोई**

स्कूल नहीं, अपना कोई मंसूबा नहीं, कोई हिर्स नहीं। वो बस वही करती है जिस के लिए बनाई गई — और पूरी दुनिया फ़ायदा उठाती है।

बेटा, एक मोमिन की ज़िंदगी के लिए उस में सबक़ है। **सिर्फ़ वो लो जो पाक और अच्छा हो, बहुत सी जगहों से। जिस से लो उसे नुक़सान मत पहुँचाओ** — मक्खी से फूल को कोई ज़रर नहीं होता। **ख़ामोशी से काम करो। और पीछे कुछ ऐसा छोड़ो जो लोगों को शिफ़ा दे।**

नबी ﷺ ने मोमिन को मक्खी से तश्बीह दी: वो अच्छा खाती है, अच्छा पैदा करती है, और जब किसी टहनी पर बैठती है तो उसे तोड़ती नहीं।

इंसाफ़, एहसान, और रिश्तेदारी

फिर सूरह उन लोगों का ज़िक्र करती है जो इनकार करते हैं, जिन्होंने ख़ुदा घढ़े, और ये उस मुआशरे के बारे में एक दर्दनाक बात ग़ौर करती है: वो बेटी की ख़बर कैसे लेते थे, चेहरे काले पड़े और शर्म से लोगों से छुपते। और उनके फ़ैसले पर अल्लाह का तब्सिरा: '**अला सा-अ मा यह्कुमून** — ख़ूब सुनो, **बुरा है वो जो वो फ़ैसला करते हैं।**'

बेटा, इस्लाम एक ऐसी दुनिया में आया जो बेटियाँ दफ़्न करती थी, और ये सूरह इस बीमारी का खुले-आम नाम लेती है।

और फिर, बेटा, वो आता है जिसे बहुत से उलमा ने क़ुरआन की सब से जामे' आयत कहा है — और 'उमर इब्न अब्दुल-'अज़ीज़ (रह0) ने इसे हर जुमा के ख़ुत्बे का इख़्तिताम बना दिया, एक अमल जो आज तक मस्जिदों में जारी है:

'इन्नल्-लाह यअ्मुरु बिल्-'अद्ल वल्-इह्सानि व ईता-इ ज़िल्-क़ुर्बा — बेशक, अल्लाह इंसाफ़ का, और एहसान का, और रिश्तेदारों को देने का हुक्म देता है — व यन्हा 'अनिल्-फ़ह्शा-इ वल्-मुन्करि वल्-बग़्य — और वो बे-हयाई से, और बुराई से, और ज़ुल्म से रोकता है — य'इज़ुकुम ल'अल्लकुम तज़क्करून — वो तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम याद रखो।'

बेटा, इसे खोल कर देखिए, क्योंकि ये एक लाइन में पूरा दीन है।

'**अल-'अद्ल**' — **इंसाफ़**: हर शख़्स को ठीक वो देना जिसका वो हक़दार है। ये फ़र्श है, कम से कम। एक मुआशरा जो सिर्फ़ यहाँ तक पहुँचे वो पहले ही ज़्यादा तर से बेहतर है।

'**अल-इह्सान**' — **एहसान**: हक़ से **ज़्यादा** देना। एक क़र्ज़ माफ़ कर देना जिसे वसूल करने का तुम्हें हक़ था। एक ऐब नज़र-अंदाज़ करना जिसे उठाने का तुम्हें हक़ था। अपना काम उस से बेहतर करना जितना कोई जाँचने वाला है। बेटा, **'अद्ल क़ानून है; इह्सान उस के ऊपर की ख़ूबसूरती है।**

'**ईता-इ ज़िल्-क़ुर्बा**' — **रिश्तेदारों** को देना। और ग़ौर कीजिए कि इसे अलग से नाम दिया गया, आम सदक़े से ऊपर। क्योंकि **जो लोग हमारे सब से क़रीब हैं वो अक्सर हमारी मेहरबानी सब से आख़िर में पाते हैं।**

और फिर तीन मुमानअतें:

'**अल-फ़ह्शा**' — बे-हयाई, शर्म-नाक गुनाह, आम तौर पर निजी।

'**अल-मुन्कर**' — जो रद्द किया जाए और जिसे ग़लत जाना जाए, आम तौर पर खुले-आम।

'**अल-बग़्य**' — लोगों के ख़िलाफ़ ज़्यादती: ज़ुल्म, वो लेना जो तुम्हारा नहीं, किसी के हुक़ूक़ पर चढ़ाई।

बेटा, तीन चीज़ें बनाने को और तीन हटाने को। **ये आयत याद कर लीजिए।** अगर एक शख़्स इस लाइन के सिवा किसी चीज़ पर न जीए, तो वो एक अच्छा मुसलमान, एक अच्छा पड़ोसी, और एक अच्छा शहरी होगा।

फिर सूरह अह्द पूरा करने का हुक्म देती है: '**व औफ़ू बि-'अह्दिल्-लाहि इज़ा 'आहत्तुम** — और अल्लाह का अह्द पूरा करो जब तुम अह्द करो — **व ला तन्क़ुज़ुल्-ऐमान ब'अ्द तौकीदिहा** — और क़समों को उनकी पुख़्तगी के बाद मत तोड़ो।'

और ये अह्द तोड़ने वाले की एक तस्वीर देती है, बेटा: '**व ला तकूनू कल्लती नक़ज़त ग़ज़्लहा मिम्-ब'अ्दि क़ुव्वतिन अन्कासा — और उस औरत की तरह मत बनो**

जिसने अपना काता हुआ सूत मज़बूत हो जाने के बाद खोल दिया, ढीले रेशों में।'

बेटा, एक औरत का तसव्वुर कीजिए जो पूरा दिन मज़बूत धागा कातने में गुज़ारती है — और फिर बैठ कर उस का ज़र्रा ज़र्रा वापस ढीले रेशे में खोली रहती है। **वो सारा काम, उसके अपने हाथों से बे-कार।**

यही वो है जो अपनी बात तोड़ना करता है। **साख़ें धीरे धीरे काती जाती हैं, धागे दर धागे, बरसों में — और एक दोपहर में खोल दी जाती हैं।**

एक अच्छी ज़िंदगी

और अब, बेटा, क़ुरआन के सब से ख़ूबसूरत वादों में से एक:

'**मन 'अमिल सालिहम्-मिन ज़करिन औ उन्सा व हुव मुअ्मिनुन — जो नेक अमल करे, चाहे मर्द हो या औरत, जब कि वो मोमिन हो — फ़-ल-नुह्यियन्नहू हयातन तय्यिबह — हम उसे ज़रूर एक अच्छी ज़िंदगी जिलाएँगे — व ल-नज्ज़ियन्नहुम अज्रहुम बि-अह्सनि मा कानू यअ्मलून — और हम उन्हें ज़रूर उनका अज्र उस के मुताबिक़ देंगे जो उन्होंने सब से बेहतर किया।**'

बेटा, तीन चीज़ें ग़ौर कीजिए।

पहले: 'मिन ज़करिन औ उन्सा' — मर्द हो या औरत, साफ़ बयान किया गया। **अज्र बिल्कुल एक जैसा है; दरवाज़ा दोनों के लिए एक ही चौड़ा है।**

दूसरे: 'हयातन तय्यिबह' — एक **अच्छी ज़िंदगी** — और ग़ौर कीजिए कि इसका वादा **यहाँ**, इस दुनिया में है, आख़िरत के ज़िक्र से भी पहले। उलमा ने इसे क़नाअत, सुकून, जो है उस पर किफ़ायत, और ईमान की मिठास से समझाया।

बेटा, और समझिए ये क्या **नहीं** है। ये दौलत या आसान ज़िंदगी का वादा नहीं। ये उस से बेहतर चीज़ का वादा है: **एक ऐसी ज़िंदगी जो अंदर से अच्छी महसूस होती है।** क्योंकि एक शख़्स के पास सब कुछ हो सकता और वो बद-हाल हो, और दूसरे के पास बहुत कम हो और वो सुकून से सोए।

तीसरे: 'बि-अह्सनि मा कानू यअ्मलून' — उन के **सब से बेहतर** अमल के मुताबिक़

अज्र। बेटा, **अल्लाह तुम्हारे बेहतरीन काम को तुम्हारे पूरे रिकॉर्ड का मेयार बनाते हैं। वो तुम्हें तुम्हारे बुरे दिनों के साथ औसत नहीं करते।**

'फ़-इज़ा क़रअ्तल्-क़ुरआन फ़स्त'इज़ बिल्लाहि मिनश्-शैतानिर्-रजीम — तो जब तुम क़ुरआन पढ़ो, तो अल्लाह की पनाह माँगो शैतान मरदूद से।'

बेटा, यहीं से वो अल्फ़ाज़ आते हैं जो हम हर तिलावत से पहले कहते हैं। और ये तुम्हें कुछ बताता है: **शैतान सब से ज़्यादा मेहनत ठीक तब करता है जब तुम इस किताब से जुड़ने वाले हो।** तो तुम पहले हिफ़ाज़त माँगते हो।

फिर सूरह उन लोगों को मुख़ातिब करती है जो क़वाइद घढ़ कर उन्हें अल्लाह की तरफ़ मंसूब करते हैं: **'व ला तक़ूलू लिमा तसिफ़ु अल्सिनतुकुमुल्-कज़िब हाज़ा हलालुंव्-व हाज़ा हरामुल्-लि-तफ़्तरू 'अलल्-लाहिल्-कज़िब — और उस के बारे में जो तुम्हारी ज़ुबानें झूठ बयान करती हैं मत कहो: ये हलाल है और ये हराम है — ताकि अल्लाह पर झूठ घढ़ो।'**

बेटा, ये एक संजीदा तंबीह है, और ये दोनों तरफ़ काटती है। **किसी चीज़ को हराम क़रार देना जिसे अल्लाह ने हलाल किया उतना ही ख़तरनाक है जितना उस को हलाल करना जिसे उसने हराम किया।** दोनों उसकी तरफ़ से बिना इख़्तियार बोलना है। इसी लिए एक मोमिन 'मैं नहीं जानता' उस से कहीं ज़्यादा कहता है जितना 'ये हराम है'।

एक आदमी में एक उम्मत

फिर सूरह इब्राहीम (अलैहि0) का ज़िक्र करती है एक ऐसे बयान के साथ जो किसी और को नहीं दिया गया:

'इन्न इब्राहीम काना उम्मतन क़ानितल्-लिल्लाहि हनीफ़ंव्-व लम यकु मिनल्-मुश्रिकीन — बेशक, इब्राहीम एक उम्मत था, अल्लाह का फ़रमाँबरदार, हक़ की तरफ़ झुका हुआ, और वो मुश्रिकों में से न था — **शाकिरल्-लि-अन्'उमिह — उसकी नेमतों पर शुक्र-गुज़ार।'**

बेटा, 'काना उम्मह' — **वो एक उम्मत था।** एक आदमी, एक पूरी जमाअत के तौर पर

बयान हुआ।

क्यों? क्योंकि एक ऐसे वक़्त में जब पूरी ज़मीन बुतों की तरफ़ मुड़ चुकी थी, **वो अकेला हक़ पर खड़ा रहा।** वो एक-शख़्सी उम्मत था। और उस से क़ौमें निकलीं।

बेटा, इस से दिल को तक़वियत लीजिए अगर कभी आपको लगे कि अपने हल्क़े में आप अकेले सही काम करने की कोशिश कर रहे हैं। **गिनती मेयार नहीं। एक शख़्स जो ठीक खड़ा हो एक उम्मत गिना जाता है।**

और ग़ौर कीजिए उस के बारे में फिर क्या नुमायाँ किया गया: 'शाकिरल्-लि-अन्'उमिह' — उसकी नेमतों पर **शुक्र-गुज़ार**। नेमतों की सूरह में, शुक्र वो सिफ़त है जो नाम की गई।

और फिर सब्त (सब्बाथ) वग़ैरह मामलात पर झगड़ने के बारे में एक तंबीह — '**इन्न रब्बक ल-यह्कुमु बैनहुम यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून**' — और फिर सूरह अपनी हिदायत देती है कि लोगों को अल्लाह की तरफ़ कैसे बुलाएँ।

हिकमत से बुलाओ

बेटा, ये वो आयत है जो हुक्मरानी करती है कि हर मुसलमान को अपने दीन के बारे में कैसे बात करनी चाहिए:

'**उद्'उ इला सबीलि रब्बिक बिल्-हिक्मति वल्-मौ'इज़तिल्-हसनह — अपने रब के रास्ते की तरफ़ हिकमत और अच्छी नसीहत से बुलाओ — व जादिल्हुम बिल्लती हिय अह्सन — और उन से उस तरीक़े से बहस करो जो बेहतर हो — इन्न रब्बक हुव अअ्लमु बिमन ज़ल्ल 'अन सबीलिही व हुव अअ्लमु बिल्-मुह्तदीन** — बेशक, तुम्हारा रब बेहतर जानता है कौन उसके रास्ते से भटका, और वो बेहतर जानता है कौन हिदायत-याफ़्ता है।'

बेटा, यहाँ तीन दर्जे दिए गए, तरतीब से:

'**अल-हिक्मह**' — **हिकमत**: सही बात, सही शख़्स से, सही वक़्त पर, सही मिक़्दार में कहना। बेटा, **हिकमत अक्सर ये जानना होता है कि क्या नहीं कहना, और कब**

ख़ामोश रहना।

'**अल-मौ'इज़तिल्-हसनह**' — **अच्छी नसीहत**: वो नसीहत जो दिल तक पहुँचे, नर्मी से दी गई, बिना ज़लील किए।

'**अल-मुजादलह बिल्लती हिय अह्सन**' — बहस, मगर 'उस तरीक़े से जो **बेहतर** हो'। सिर्फ़ जब ज़रूरी हो, और तब भी, अपने बेहतरीन अंदाज़ में।

और ग़ौर कीजिए आयत कैसे ख़त्म होती है, बेटा: तुम्हारा रब जानता है कौन हिदायत पर है और कौन नहीं। यानी: **ये तुम्हारा शोबा नहीं। तुम्हारा काम तुम्हारी दावत का अंदाज़ है। नतीजा उसका है।**

बेटा, कितने लोग इस दीन से उस शख़्स के सबब दूर धकेल दिए गए जो फ़न्नी तौर पर सही था और बिल्कुल बे-अदब? **ये आयत ठीक इसी को रोकने के लिए मौजूद है।**

और फिर बदला लेने का क़ानून और बेहतर इंतेख़ाब: '**व इन 'आक़ब्तुम फ़-'आक़िबू बि-मिस्लि मा 'ऊक़िब्तुम बिह — और अगर तुम सज़ा दो, तो उस के बराबर सज़ा दो जिस से तुम्हें नुक़सान पहुँचा — व ल-इन सबर्तुम ल-हुव ख़ैरुल्-लिस्-साबिरीन — मगर अगर तुम सब्र करो, तो ये सब्र करने वालों के लिए बेहतर है।**'

बेटा, छत और सिफ़ारिश दोनों ग़ौर कीजिए। तुम **बराबर** नुक़सान से जवाब दे सकते हो — कभी ज़्यादा नहीं। और फिर, फ़ौरन: **मगर सब्र बेहतर है।**

रिवायत है कि ये उहुद की जंग के बाद उतरी, जब नबी ﷺ ने देखा कि उनके चचा हमज़ा (रज़ि0) के साथ क्या किया गया और उसी तरह जवाब देने की बात की — और अल्लाह ने ये नाज़िल की, और उन्होंने सब्र चुना।

और आख़िरी आयतें, बेटा: '**वस्बिर व मा सब्रुक इल्ला बिल्लाह — और सब्र करो, और तुम्हारा सब्र अल्लाह की तौफ़ीक़ के सिवा कुछ नहीं — व ला तह्ज़न 'अलैहिम — और उन पर ग़म मत करो — व ला तकु फ़ी ज़ैक़िम्-मिम्मा यम्कुरून** — और उस से तंगी में मत पड़ो जो वो साज़िश करते हैं।'

बेटा, 'व मा सब्रुक इल्ला बिल्लाह' — **तुम्हारा सब्र तुम्हारी अपनी ताक़त से नहीं। ये**

अता किया जाता है। तो जब तुम्हें लगे कि तुम्हारा सब्र ख़त्म हो गया, तुम कोई ऐसी चीज़ नहीं माँग रहे जो तुम्हारे पास होनी चाहिए थी — तुम उन से माँग रहे हो कि जो हमेशा उन्हीं का देना था उस में से और दो।

'इन्नल्-लाह म'अल्-लज़ीनत्-तक़ौ वल्-लज़ीन हुम मुह्सिनून — बेशक, अल्लाह उन के साथ है जो उस से डरते हैं और जो एहसान करने वाले हैं।'

बेटा, यही नेमतों की सूरह की आख़िरी लाइन है। एहसान पर एहसान गिनाने के बाद — मवेशी, बारिश, समंदर, सितारे, शहद — **ये सब से बड़ी नेमत पर ख़त्म होती है: कि वो तुम्हारे साथ हैं।**

इस सूरह में बाक़ी हर चीज़ वो थी जो उन्होंने **दी**। ये आख़िरी **वो ख़ुद** हैं।

इस सूरह से क्या सीखा

1. उसका हुक्म उसके मुक़र्रर वक़्त पर आता है — वक़्त के मालिक को जल्दी में डालने की कोशिश मत करो।

2. तख़्लीक़ के बाद नाम ली गई पहली नेमत गरमाहट है — और वो एक मंज़र की ख़ूबसूरती का ज़िक्र करते हैं, सिर्फ़ उसकी अफ़ादियत का नहीं।

3. 'गिनो तो गिन न सकोगे' — और आयत बख़्शने वाले और रहम वाले पर ख़त्म होती है, क्योंकि वो जानते हैं हम शुक्र में कोताही करेंगे।

4. मक्खी जैसे बनो: सिर्फ़ पाक लो, जिस से लो उसे नुक़सान मत दो, ख़ामोशी से काम करो, और पीछे कुछ शिफ़ा देने वाला छोड़ो।

5. आयत 90 याद कर लो — इंसाफ़, एहसान, रिश्तेदारी; और बे-हयाई, बुराई और ज़ुल्म के ख़िलाफ़। एक लाइन में पूरा दीन।

6. 'हयातन तय्यिबह' का वादा इसी दुनिया में है — दौलत नहीं, बल्कि वो ज़िंदगी जो अंदर से अच्छी लगे; और अज्र तुम्हारे सब से बेहतर अमल पर मिलता है, औसत पर नहीं।

7. हिकमत और अच्छी नसीहत से बुलाओ — हिदायत तुम्हारा शोबा नहीं; तुम्हारा अंदाज़ है।

या अल्लाह, हमें उस पर शुक्र-गुज़ार बना दीजिए जिसे हम गिन नहीं सकते, अपनी मदद से सब्र वाला बना दीजिए, और उन में रखिए जिन के साथ आप हैं। आमीन।